OM - 19- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/10/2021 11:46 AM Page 10

सृष्टि की रचना करने के लिए...

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

शास्त्र कहता है कि ब्रह्मा जी ने संकल्पों से सृष्टि रची। यहाँ तक कि वो तीनों मतलब ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को भी साथ जोड़ते हैं। अभी हम सभी कुछ इसमें ऐसे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पहलू की चर्चा करना चाहते हैं। धार्मिक पहलू यही है कि निश्चित रूप से ब्रह्मा ने संकल्पों द्वारा सृष्टि की रचना की लेकिन इसको सिर्फ अंधविश्वास के साथ हम मान सकते हैं, क्योंकि इसपर बहस करने का सरोकार कुछ नहीं लगता। अगर इसके वैज्ञानिक पहलू को देखें तो हम पायेंगे कि ब्रह्मा को चारों वेदों का ज्ञाता कहते हैं। इनको चार मुख दिखाते हैं। आज की कलयुगी सृष्टि में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं होगा जो इस बात को स्वीकार करने को राज़ी हो कि कोई व्यक्ति को चार मुख हो सकते हैं। लेकिन ब्रह्मा को लोगों ने स्वीकार किया है। इसका कारण डर है, भय है इस तरह का कि कहीं कुछ हो ना जाये, अगर हम इसपर बहस करते हैं तो। मामला ये नहीं है कि हम इसपर बहस करें। मामला ये है कि हम उस बात को यहाँ भी स्वीकार कर लें कि अगर किसी के यहाँ चार हाथ, चार मुख, चार पैर वाला बच्चा पैदा हो तो उसको भी स्वीकार करें। लेकिन उसको तो आप हॉस्पिटल ले जाते हैं, ऑपरेशन करवाते हैं।

सिद्ध क्या होता है इससे कि हम सभी सिर्फ और सिर्फ धार्मिक भावना के आधार से इन सब बातों को मानते हैं लेकिन इसके आध्यात्मिक पहलू से रूबरू नहीं हैं। आपको पता हो कि जब तक आपको इसका पहलू समझ में नहीं आयेगा कि ब्रह्मा ने सृष्टि को रचा तब तक न तो आप ब्रह्मा को मानेंगे और न ही सृष्टि को मानेंगे। अगर हम मानते तो डरते कि क्या ब्रह्मा ने ऐसी सृष्टि रची होगी! जहाँ पर अफरा-तफरी है, मार-काट है, एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या, नफरत है ऐसी सृष्टि तो नहीं रची होगी! अगर ब्रह्मा ने सृष्टि रची तो उसकी पूजा भी नहीं करते हैं और पूजा न करने का कारण बताया कि उन्होंने अपनी स्वयं की पुत्री से ही विवाह कर लिया। अब ये बातें क्या मानने योग्य हैं? या सिर्फ और सिर्फ सुन लिया और मान लिया। आप देखो कि जिस ब्रह्मा को लोगों ने इतना ऊंचा दर्जा दिया उससे कहीं ज़्यादा उन्हें गिरा दिया।

अब हम इसके थोड़े आध्यात्मिक पहलू की ओर चलते हैं और इसको समझते हैं विवेकशील बुद्धि से। सभी देवताओं को सजा-सजाया दिखाते हैं लेकिन एक ब्रह्मा है जिनको बुजुर्ग दिखाते हैं। सफेद दाड़ी-मूँछ वाला दिखाते हैं। शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि जब एक बार देवासुर संग्राम हुआ तब चारों तरफ राक्षसों ने आक्रमण करना शुरु किया। उस समय कोई भी ऐसा नहीं था जो इस सृष्टि को बचा सके। तो कहते हैं कि विष्णु जी ब्रह्मा जी के पास गये और उनके पास जाकर कहा कि हे प्रजापिता इस सृष्टि को कैसे बचाया जाये? उन्होंने कहा कि अब बस वो समय आने वाला है कि कल्की अवतार कलयुग में होगा और नई सृष्टि की रचना की शुरुआत होगी।

अब कल्की अवतार क्या है, कैसे ये शुरु होता है इसपर हमको नहीं जाना है। ये तो आपको सिर्फ एक शास्त्रगत वर्णन बताया कि इनका शास्त्रों में वर्णन है। लेकिन आध्यात्मिक पहलू कहता है कि अगर ब्रह्मा बुजुर्ग हो गये और उनको भी पूरी तरह से ज्ञात नहीं कि कैसे नई सृष्टि का निर्माण होगा तो ज़रूर ऐसी कोई शक्ति होगी जिन्होंने उनको प्रेरणा दी होगी। शिव महापुराण की एक घटना है, कहा जाता है कि एक बार विष्णु जी अपने जन्मों को भूल गये तो वो ब्रह्मा जी के पास गये, ब्रह्मा जी ने कहा मुझे खुद अपने जन्म याद नहीं है तो मैं आपको कैसे बताऊंगा। दोनों मिलकर शंकर जी के पास गये जो तपस्या कर रहे थे, शंकर जी ने कहा कि मैं तो खुद तपस्या में लीन हूँ, मुझे नहीं याद कि हमारे कितने जन्म हुए। कहते हैं तीनों मिलकर शिवलिंग के पास पहुंचे तो मान्यता कहती है कि उसमें से एक ज्योति निकली और वो ब्रह्मा के मस्तक में प्रकट हुई। उसने कहा कि सृष्टि की आदि में तुम कृष्ण थे, बाद में नारायण और तुम्हारा अंतिम जन्म ब्रह्मा का है।

कहते हैं इसका यादगार भी है कि विष्णु की नाभि से ब्रह्मा जी को निकलते हुए दिखाते हैं इसका मतलब है कि ब्रह्मा जी और विष्णु जी का कोई गहरा कनेक्शन है। नाभि से अगर कोई चीज़ जुड़ी हुई है तो उसका कनेक्शन जन्म से है। तो इससे क्या सिद्ध होता है कि ब्रह्मा, विष्णु का लास्ट जन्म है। जिसमें वो ब्रह्मा बने लेकिन ये तीनों बातें बताने वाला कौन? उनको नाम दिया शिव। ज्योति के रूप में प्रकट हुए ब्रह्मा जी के ललाट पर। ये है सबसे दिव्य और सही मान्यता जो सैद्धान्तिक रूप से भी सत्य लग रही है, वैज्ञानिक रूप से भी सत्य लग रही है और आध्यात्मिक रूप से भी सत्य लग रही है। कहा जाता है कि त्रिमूर्ति शिव है न कि ब्रह्मा। मतलब शिव ने ब्रह्मा को रचा। ब्रह्मा द्वारा संकल्पों से सृष्टि की रचना करवाई। अगर आपको इसमें थोड़ा भी संदेह लगता है तो आप महाशिवपुराण को एक बार देख सकते हैं।

ये कथा नहीं है, ये सच्चाई है और इसका हम प्रमाण ब्रह्माकुमारीज़ में 86 वर्षों से देख रहे हैं। जहाँ से उनके संकल्पों से और कुछ पवित्र आत्मायें जो शिव रचनाकार के द्वारा अनेक ब्रह्मावत्सों को, पवित्र आत्माओं को बनाकर इतने बड़े विश्व को परिवर्तन कर रहे हैं इसका प्रैक्टिकल स्वरूप अगर देखना है तो यहाँ देखो। सृष्टि की रचना ऐसी होती है। बिना शिव निराकार परमात्मा के, ज्योति बिन्दु के, बिना ब्रह्मा के सृष्टि की रचना नहीं हो सकती। ऐसे ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पूर्ण इतिहास को अगर आप ध्यान से देखेंगे तो पायेंगे कि सच में ये कार्य विश्व परिवर्तन का कार्य है।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न :- हमारी मन्सा साकाश की विधि सही है या नहीं और वह अन्य आत्माओं तक पहुंच रही है और उनको सहयोग दे रही है, इसका हमें कैसे पता चले?

उत्तर :- हमारी मन्सा साकाश में सबके प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना होती है और हम पूरे विश्व कल्याण के लिए मन्सा सकाश देते हैं तो वह अनेक आत्माओं तक ज़रूर पहुंचती है। लेकिन कोई आत्मा उसे कैसे एडॉप्ट करती है, इसमें उसका अपना भी पार्ट होता है। हम आत्माएं विश्व को साकाश देते हैं पर उस साकाश को वही आत्माएं कैच कर पाती हैं जो परमात्मा की लगन में मगन होती हैं, चाहे किसी भी विधि से हो। हम परमात्मा के साथ जुड़कर फरिश्ते रूप में साकाश देते हैं और उनको ताकत देते हैं। यहाँ भी कहेंगे कि हम उनके विकर्म विनाश नहीं करते हैं, हम उनको मदद करते हैं।

जैसे किसी को सैल्वेशन चाहिए, कोई कहीं पर रास्ता भटक गया है लेकिन हम उसको साकाश दे रहे हैं, तो रास्ता भटकने वाले की बुद्धि में एकदम से टच होगा कि यह रास्ता गलत है, यह सही है। तो यह जो कनेक्शन हम देते हैं, यह साकाश होती है। बाकि कर्म उसका स्वयं का रहता है। उसकी बुद्धि में ही दोनों बातें टच होंगी। उसका अपना परमात्मा के साथ कनेक्शन होगा और हमारे साकाश के पहुंचने का कनेक्शन होगा, तो दोनों जब काम करते हैं तो व्यक्ति को आगे बढ़ा देते हैं। इसलिए साकाश पूरे विश्व को दी जाती है पर उसको एडॉप्ट करने वाली आत्माएं नम्बरवार होती हैं। उसी तरह से परमात्मा पढ़ाते सबको एक समान हैं पर पढ़ने वाली आत्माएं सब नम्बरवार होती हैं। ऐसे ही साकाश दी सबको जाती है पर एडाप्सन कोई-कोई कर पाता है। लेकिन हमको सकाश देनी सबको है।

प्रश्न :- मन्सा सेवा की सफलता किस आधार पर आधारित है?

उत्तर :- मन्सा सेवा की सफलता के लिए हमारा मन शुद्ध और शांत होना चाहिए, उसमें हरेक आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना होनी चाहिए। किसी के लिए भी घृणा या द्वेष नहीं होना चाहिए। इसके लिए ड्रामा का पार्ट हमारे अंदर पक्का होना चाहिए। जब ड्रामा का पार्ट हमारे अंदर पक्का होता है, तो हम प्रश्न चिन्ह नहीं बनते हैं और जब हम प्रश्न चिन्ह नहीं बनते हैं तो हम शांत रहते हैं। प्रसन्न चित्त रहते हैं। तब हमारी मन्सा में ताकत आती है और मन्सा सेवा सहज हो जाती है।

प्रश्न :- किसी जॉब में सफलता के लिए कैसे संकल्प करें? कैसे योग करें और बाबा को कैसे साथ रखें?

उत्तर :- अपने जीवन में सफलता पाने के लिए सबसे पहले आप परमात्मा के प्यार को और उनकी ब्लैसिंग को अपने जीवन में अनुभव करें। जब आप ऐसा अनुभव करेंगे तो आपके अंदर से वो गुण इमर्ज होने लगेंगे, जो आपको आपके लक्ष्य तक पहुंचाने में आपकी मदद करेंगे। और समस्याएं तो हरेक के जीवन में होती ही हैं, लेकिन हमें उन समस्याओं से निकलने के लिए अपने योग को बढ़ाना होगा। योग से ऐसा वायुमंडल बनाना होगा, जिसमें कोई भी समस्या अपना प्रभाव ना दिखा सके। इसके लिए आप अपनी एकाग्रता को इतना बढ़ा दें कि चारों तरफ जो भी होता रहे, फिर भी हमारी मन-बुद्धि हमारे लक्ष्य की तरफ केंद्रित रहे।

ऐसे कई उदाहरण तो लौकिक दुनिया में भी मौजूद हैं जिन्होंने सिर्फ अपने आत्मविश्वास के द्वारा कठिन हालातों के अंदर भी अपने लक्ष्य को प्राप्त किया, तो आपके साथ तो डायरेक्ट परम सत्ता का साथ है, आप खुद एक शिव शक्ति हैं, जिसके पास शिव की हर शक्ति मौजूद है। तो सिर्फ आप अपना विश्वास बढ़ाएं तो आप उससे बाहर आ सकते हैं, और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

आप अपने संकल्प पर दृढ़ रहें। किसी भी परिस्थिति के कारण, आपका संकल्प कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए और अपने संकल्प को बार-बार दोहराते रहिये, माना अपने लक्ष्य को बार-बार सकारात्मक संकल्पों का पानी दीजिये। जिससे आपकी छाप आपके मानस पटल पर गहरी होती जाये। और उस संकल्प का एक वायुमंडल बनता जाये। आप इसे अभ्यास की तरह भी ले सकते हैं। जितना आप अभ्यास करते जायेंगे। तो उस लक्ष्य पर पहुँचने की पॉसिबिलिटी बढ़ती जाएगी। आपको अपने अंदर सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाना है। आपके लिए आपको सकारात्मक रहना है और बाबा के साथ का अनुभव करने के लिए आपको बुद्धि से बाबा के साथ कम्बाइन्ड रहना है। और हर कदम श्रीमत प्रमाण चलना है। तो जो बाबा कहेंगे वो आपको अनुभव होगा कि बाबा आपके साथ-साथ चल रहे हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com